कोंकणी साहित्य

डॉ. चंद्रलेखा

कोंकणी साहित्य की रचनायात्रा 2002 तक आते आते बहुत सारे पड़ाव पार कर चुकी है। 'कोंकणी साहित्य'99' के बारे में लिखते हुए मैंने ही लिखा था कि कोंकणी में कोरपोरा प्रोजेक्ट बन चुका है। कोंकणी विश्वकोश दो भागों में प्रकाशित हो चुका है। (अब चार भाग हो चुके हैं। 'कोंकणी विकास अध्ययन केंद्र' विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत गोवा विश्वविद्यालय में खोला गया है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली के नेतृत्व में 'कोंकणी हिंदी वाचन पुस्तिका' और 'कोंकणी हिंदी स्वयंशिक्षक' भी उसी धारा का प्रमाण है। इंग्लिश-कोंकणी शब्दकोश जो एक भाग में था, अब दूसरा भाग भी प्रकाशित हो चुका है। चेन्नई से प्रो. जर्नादन द्वारा रचित कोंकणी इंग्लिश एनसायक्लोपेडिक डिक्शनरी भी कोंकणी साहित्य में एक स्तुत्य प्रयास ही है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय में ही 'भारतीय भाषा कोश' के अंतर्गत 'कोंकणी कोश' बनाने का कार्य हो रहा है। 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग', मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से 'शब्दावली कार्यशाला' का आयोज़न गोवा विश्वविद्यालय में, दिसंबर 2002 में शब्दावली आयोग की निगरानी में ही हुआ था। भविष्य में तकनीकी शब्दों के कोश भी बनेगें। यात्रा बहुत लंबी है, कस्टदायी भी, फिर भी कोंकणी प्रेमी अपना कार्य करने के लिए कटिबद्ध हैं।

'गोवा कोंकणी अकादमी', 'कोंकणी भाषा मंडल', मडगाँव, 'टॉमस स्टीवन्स कोंकणी केंद्र, 'अस्मिताय प्रतिष्ठान' जैसी संस्थाएँ कोंकणी भाषा को आगे ले जाने में सक्षम हैं। जरूरत है सिर्फ इकठ्ठे होकर, एक दिशा में कार्य करने की। अलग-अलग लिपियों के कारण कोंकणी भाषा साहित्य बिखरा पड़ा है। पता नहीं कोंकणी के कवि चा. फ्रा. डिकॉस्टा का सपना कब साकार होगा? वे चाहते थे कि कर्नाटक की नेत्रावती नदी और गोवा की जुआरी नदी का संगम

हो! कर्नाटक से बहती कोंकणी धारा के शब्दों को, जब गोवा की कोंकणी धारा से मिलाया जाएगा तो कोंकणी भाषा का कल्याण ही होगा। देखें, कोंकणी प्रेमी अपने-अपने दायरों से उठकर कब नेत्रावती और जुआरी को मिला पाते हैं। नेत्रावती के नेत्रों में जुआरी का प्रतिबिंब हो और जुआरी की बाँहों में उसे समाने की, निखारने की, संवारने की क्षमता हो और प्रतिबिंब को नया रूप देने की पहचान। नेत्रों के स्पंदनों को उजागर कर उसे अपने प्रवाह में नया रूप देकर उससे नया आयाम स्थापित करना है। इससे गोवा के कोंकणी साहित्य को नई गति मिलेगी। उसमें नई साहित्यिक विधाओं का विकास भी होगा। अलग-अलग विधाओं में, कोंकणी साहित्य को निखारने की जिम्मेवारी 'नेत्रावती' और 'जुआरी' के स्पंदनों को पहचानने वाले साहित्यकारों की होगी।

इस साल कोंकणी साहित्य की पुष्पमाला में 'कर्नाटक कोंकणी साहित्य अकादमी' ने 'कोंकणी समांतर कोश' प्रकाशित किया है। बस्ति प्रकाशन ने 'उलोवचे कोंकणी शब्द संग्रह' अर्थात कर्नाटक में बोले जाने वाले कोंकणी शब्दों-को प्रकाशित किया है। इस लेख को लिखने के लिए सन् 2002 में पुस्तकों की जानकारी इकठ्ठा करने में एम. ए. की एक छात्रा कु. रमा मुरकुंडे ने मेरी बहुत मदद की है। अलग-अलग प्रकाशकों से जानकारी लाकर इकठ्ठा करने में भाग-दौड़ करनी पड़ती है वह रमा ने की है। मैंने पुस्तकों का जायजा लिया और लेख लिखा है। मैं अपनी इस छात्रा की शुक्रगुजार हूँ जिसने मेरी मदद की। आइए अब देखें, कोंकणी साहित्य में, किन-किन साहित्यकारों ने क्या-क्या योगदान दिया है।

कुल मिला कर इस साल 47 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। (यह जानकारी सिर्फ गोवा में प्रकाशित नागरी लिपि की कोंकणी की है। कन्नड और मलयालम लिपि के आँकड़े इसमें शामिल नहीं है। हाँ, अगर ये पुस्तकें नागरी लिपि में आई हैं तो उसका जिक्र किया है, जैसे शब्दकोशों के बारे में लिखा गया है।) इन पुस्तकों में छः कविता और गीत संग्रह, तीन कहानी संग्रह, आठ नाटक, बच्चों के लिए अठारह पुस्तकें, और अन्य बारह पुस्तकें शामिल हैं। **काव्यमाला** में सब से पहले उल्लेख करना चाहूँगी सुरेश गुंडू आमोणकार द्वारा रचित पुस्तक 'श्री भगवंतान गायिल्ले गीत'- अर्थात श्रीमद्भगवद्गीता- जिसे डॉ. किरण बुडकुले ने 'कोंकणी माल्यांत चिरंतनाचे म्होंव' अर्थात कोंकणी मधुकोश में चिरंतन का शहद कहा है। कितनी सही उक्ति दी गई है! गीता में जो मधुकोश है वह और कहाँ होगा? इसकी चिरंतरता को हम सब जानते हैं। कोंकणी साहित्य में अब तक चार, पाँच लोगों ने गीता सार देने का प्रयत्न किया है। पर सुरेश आमोणकार की गीता की विशेषता यह है कि उन्होंने संस्कृत श्लोक के साथ-साथ उसका कोंकणी समश्लोक भी दिया है। बाद में उसका अन्वय, उसके अर्थ, उसका

कोंकणी स्वरूप तथा सामान्य लोगों की समझ में आए, ऐसे उसका चिंतन सरल भाषा में देने का प्रयत्न किया है। संस्कृत श्लोकों को कोंकणी भाषा में लाते समय उन्होंने छंद, उसकी मात्राओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा है। सही मानो में कोंकणी काव्य में इस कृति का योगदान चिरंतन रूप से रहेगा ही। एक उदाहरण देखें-

मूल- धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत संजयः ।। 1-11

कोंकणी- धर्मक्षेत्रार कुरुक्षेत्रार जमिल्लया झुजूंक खुमखुमेन।
म्हज्या नि पांडुपुत्रांनी केलें गा संजया कितें।। 1-1(2)

हिंदी भावार्थ- धर्मक्षेत्र में कुरुक्षेत्र में, जो झूजारी हुए हैं जमा,
मेरे और पांडुपुत्रों ने, क्या-क्या किया है संजय।।

शब्द चयन और अर्थघटन तथा कोंकणी के नाद और ताल को आत्मसात करनेवाला साहित्यकार ही यह महान कार्य संपन्न कर सकता है। वैसे कोंकणी के सूत्रधार शणै गोंयबाब- पूरा नाम- वामन रघुनाथ वर्दे वालावलीकार- ने भी 'श्री भगवंताले गीत' रूप में गीता का अनुवाद किया है। उसमें गद्यात्मक तत्व ज्यादा है। संस्कृत शब्दों के समानार्थी शब्दों को कोंकणी में देने का कार्य उस महान व्यक्ति ने किया ही है। सुरेश आमोणकार की विशेषता उनके कोंकणी समश्लोकों में ही है। बाद में सामान्य अर्थ और उदाहरण हैं जो और महत्वपूर्ण बनते हैं। इस चिरंतन गीत के बाद बाकी काव्य संग्रहों पर लिखना जरूरी नहीं लगता क्योंकि उनमें कोंकणी का कोई नया रूप सामने नहीं आता। आज तक जो चल रहा है उन्हीं चक्रों में वे काव्य संग्रह अपना-अपना संकुचित रचना संसार रचते हैं, उसका सिर्फ नामोल्लेख करना चाहूँगी-

'नवी आंकरी' - नया अंकुर - फा. लिनु द सा,
'कवि' - - श्रीनिवास प्रभूदेसाई,
'कोडहम' - - देविदास कदम,
'यादिच्या देगेर' - यादों के किनारे - भालचंद्र गांवकार
'काळचक्र' - - अतुल र. पंडित

इसके अलावा दो नए कवियों के काव्य संग्रह भी गोवा कोंकणी अकादमी ने 13 अक्तूबर 2002 को प्रकाशित किए हैं- 'काणी काणी कोतवा' - श्री गौरीश वेर्णेकार और 'काळखांतले सूर्य'- श्री गणाधीश रामचंद्र प्रभुदेसाई।

उपन्यास विधा में एक भी कृति नहीं है। वैसे भी यह विधा कन्नड लिपि की कोंकणी में ज्यादा पनपी है। गोवा की धरती पर इस विधा का विकास होना अभी बाकी है। **निबंध** में दीपा मुरकुंडे रचित 'पडबिंब' एक मात्र कृति है। भालचंद्र गांवकार द्वारा रचित 'अंदल्ले उस्वास' - रुकी हुई साँसें - **कहानी संग्रह** है।

नाटक विधा में भरत नायक के दो नाटक हैं- 'युगांत' और 'राम राम भाऊँ। गोकुलदास मुळवी ने 'मूल पुरुष' नाटक लिखा है। इन सब का उल्लेख मात्र कर रही हूँ। इनमें क्या-क्या रचा गया है उसके बारे में इतना ही कह सकती हूँ कि 2002 तक जो कोंकणी साहित्य रचा गया है उनमें नए प्रयोग हुए ही नहीं है। दूसरी भारतीय भाषाओं में अलग-अलग साहित्यिक विधाओं में नए-नए प्रयोग हुए हैं। पर गोवा में नागरी लिपि में जो कोंकणी साहित्य रचा जा रहा है उनमें कहीं भी ताज़ा हवा नहीं है। निबंध, आलोचना जैसी विधा में भी अभी बहुत कुछ लिखा जाना बाकी है। समीक्षा, आलोचना जैसी विधा में तो यहाँ पर आस्वादन के स्तर तक ही चिंतन हो पाया है। कोंकणी प्रेमी जिसे **'समीक्षा'** समझते हैं वैसी एक पुस्तक का नाम हैं 'अस्तंनेची समीक्षाकडेन इश्टागत' अर्थात- पश्चिमी समीक्षा के साथ दोस्ती-सवाल उठता है कि समीक्षा पश्चिमी है या पाश्चात्य? इनमें भेद है कि नहीं ? अगर है तो क्या है? इसका विचार न किया जाए तो फिर उसके बारे में लिखने का औचित्य ही नहीं रह जाता।

हास्य-व्यंग्य जैसी विधाएँ तो कोंकणी के लिए अभी काफी दूर हैं। आनेवाला समय ही तय करेगा कि कोंकणी साहित्य में इनका स्वरूप क्या होगा। निबंध में भी नवीनता का अभाव ही है।

सन् 2002 में **बाल-साहित्य** पर कुल अठारह पुस्तकें आई हैं। 'युगवेद' जैसी प्रकाशन संस्था ने ही कुल तेरह पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस तरह जहाँ तक आंकडों का सवाल है पुस्तकें हैं, पर उनमें आज के बच्चों के समसामयिक विश्व को ध्यान में रखकर बहुत कम लिखा गया है। आज के बच्चों की जानकारी दस साल पूर्व के बच्चों से, नि:संदेह ज्यादा ही है। टी.वी.,कंप्यूटर, ई-मेल और इंटरनेट के माध्यम से बच्चों के पास आज बटन दबाते ही जानकारी का अंबार खड़ा हो जाता है पर उसे ज्ञान के रूप में ढालना जरूरी होता है। इस संदर्भ में बच्चों की समस्या को राह दिखानेवाली पुस्तकें कोंकणी बाल साहित्य में नहीं हैं। वैज्ञानिक रूझानवाली कहानियों का संसार भी उसमें बहुत कम है। फिर भी बच्चों के लिए पुस्तकें आई हैं, इसे नकारा नहीं जा सकता।

अनुवाद विधा में भी इस साल कुछ खास कार्य नहीं हुआ है। हमारे बहुभाषिक देश में अनुवाद के द्वारा ही हम अपने-अपने प्रदेश से ऊपर उठकर राष्ट्रीय साहित्य और

विश्वसाहित्य के बारे में सोच सकते हैं। अपनी संस्कृति के बारे में हम अनुवाद द्वारा ही परिचित हो सकते हैं। हमारी अलग-अलग प्रादेशिक संस्कृति अलग-अलग भाषाओं में अपनी-अपनी महक लिए हुए है। उन्हें राष्ट्रीय धारा में अर्थात हिंदी में लाना जरूरी है। उसी तरह हमारी राष्ट्रीय धारा के साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना है। कोंकणी प्रेमियों को इसके बारे में भी सोचना होगा। हमारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व अगर हम उचित रूप से नहीं कर पाएंगे तो उससे हमारा ही नुकसान होगा।